1.3. मानव-सभ्यता के विभिन्न चरण *(Different Stages of Human Civilization)*

मानव और उसके पूर्वजों में मुख्य अंतर यह था कि उसके पूर्वज पूर्णतः प्रकृति पर आश्रित थे। उनमें और पशुओं में बहुत कम अंतर था; परंतु मानव ने अपनी बुद्धि का प्रयोग कर अपने-आपको स्वावलंबी बनाना आरंभ किया। इसके लिए उसे अपनी सुरक्षा एवं भोजन जुटाने के लिए हथियारों एवं विभिन्न उपकरणों का निर्माण करना पड़ा। मानव-विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ उसके उपकरण भी बदलते गए। किसी युगविशेष में एक ही प्रकार के उपकरण का बाहुल्य रहा। इसी को आधार मानकर विद्वानों ने मानव-सभ्यता के इतिहास को क्रमशः **पाषाणयुग** (Stone Age), **ताम्रकाल** (Copper Age), **कांस्यकाल** (Bronze Age) और

Scanned with CamScanner

लौहयुग (Iron Age) में विभक्त किया; परंतु यह विभाजन यथेष्ट नहीं था। इसलिए, कालांतर में मनुष्य के क्रमिक विकास के आधार पर मानव-सभ्यता को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया गया—**पाषाण-युग** एवं **धातुयुग**। इनमें प्राचीनतम पाषाण-युग था। पाषाण-युग को तीन भागों में विभक्त किया गया है—**पुरापाषाण-युग** (Paleolithic Age), **मध्यपाषाण-युग** (Mesolithic Age) और **नवपाषाण-युग** (Neolithic Age)। मानव-सभ्यता का आरंभ इसी पाषाण-युग में हुआ।

1.4. पुरापाषाण-युग *(The Paleolithic Age : Old Stone Age)*

मनुष्य ने अपने जीवन का सबसे लंबा समय इसी युग के अंतर्गत व्यतीत किया है। इसी समय प्रकृति से संघर्ष कर उसने जीने की कला सीखी। इस समस्त युग को क्रमशः **निम्न** (lower), **मध्य** (middle) तथा **उच्च** (upper) पुरापाषाण-काल या **पूर्व-पुरापाषाण-काल**, **मध्य-पुरापाषाण-काल** और **उत्तर-पुरापाषाण-काल** में विभक्त किया गया है। इन विभिन्न चरणों में मानव-विकास की प्रक्रिया आरंभ हुई, जिसका प्रभाव बाद की प्रगति पर पड़ा। यह विभाजन पत्थर के व्यवहृत हथियारों के आधार पर किया गया।

Scanned with CamScanner

पत्थर के व्यवहार ...

(क) निम्न या पूर्व-पुरापाषाण-काल (The lower Paleolithic Age)—इस युग में मानव का जीवन अस्थिर था। उसके आवास, भोजन या वस्त्र की व्यवस्था नहीं थी। मानव समूह में शिकार कर अपना भोजन संग्रह करता था। कालांतर में उसने अग्नि का आविष्कार किया और वह गुफाओं में रहने लगा। आखेट करने के लिए उसे हथियारों की जरूरत पड़ी। सुगमता से उपलब्ध पत्थरों से हथियार का काम लिया गया। आरंभिक हथियार बेडौल और भोंड़ी आकृतिवाले थे। इस काल का अधिकांश **हिमयुग** (Ice Age) के अंतर्गत व्यतीत हुआ। इस युग के हथियारों में प्रमुख थे—हाथ की कुल्हाड़ी (hand-axe), खंडक उपकरण (chopping tools), कोर (core) एवं फलक (flake) उपकरण और विदारणियाँ (clevers)। भारत में इस संस्कृति के दो प्रमुख केंद्र थे—उत्तर-पश्चिम में **सोहन** (पाकिस्तान में सोहन नदी के किनारे) अथवा **पेबुल-चॉपरचॉपिंग संस्कृति** और दक्षिण भारत की **हैण्डएक्सक्लीवर** परंपरा या **मद्रासियन संस्कृति**। इन संस्कृतियों का विकास नदी-घाटियों में हुआ। इन दो प्रमुख केंद्रों के अतिरिक्त भारत के अन्य भागों से भी—यथा नर्मदा घाटी, महाराष्ट्र की प्रवरा नदी, आंध्रप्रदेश, कर्णाटक, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और असम की घाटियों से—पूर्व-पुरापाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के दौरान पाई गई कुल्हाड़ियाँ बहुत-कुछ पश्चिमी एशिया, यूरोप और अफ्रिका से पाई गई कुल्हाड़ियों से मिलती-जुलती हैं। मध्यप्रदेश के भीमबेटका (रायसीन) और उत्तरप्रदेश के बेलन घाटी (मिर्जापुर) से गुफाओं का अस्तित्व प्रकाश में आया है, जहाँ मानव समूहों में रहता था। इस समय का मानव **भोजन-संग्राहक** (food gatherer) था, **भोजन-उत्पादक** (food producer) नहीं।

(ख) मध्य-पुरापाषाण-काल (The middle Paleolithic Age)—इस काल में मनुष्य ने अपने उपकरणों को ज्यादा सुंदर एवं उपयोगी बनाया। अब क्वार्टजाइट की जगह जैस्पर, चर्ट इत्यादि चमकीले पत्थरों की सहायता से फलक-हथियार ही बनाए गए। इसीलिए, प्रसिद्ध भारतीय पुरातत्त्ववेत्ता डॉ० एच० डी० सांकलिया ने मध्य-पुरापाषाण-काल को **फलक-संस्कृति** (flake culture) का नाम दिया है। इस काल में फलकों की सहायता से मुख्यतः **बेधक** (borers) खुरचनी (scrapper), बेधनियाँ (points) इत्यादि बनाए गए। कहीं-कहीं हाथ की कुल्हाड़ियाँ भी मिलती हैं। इस युग के हथियार पहले की अपेक्षा ज्यादा सुडौल, छोटे, पैने और उपयोगी थे। भारत में इस संस्कृति के अवशेष उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की अपेक्षा प्रायद्वीपीय क्षेत्र से ज्यादा प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के प्रमुख स्थल हैं बेलन घाटी (उत्तरप्रदेश), उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, कृष्णा घाटी (कर्नाटक), धसान तथा बेतवा घाटी (मध्यप्रदेश), सोन घाटी (मध्यप्रदेश), नेवासा (महाराष्ट्र) इत्यादि। सिंध, राजस्थान, गुजरात, उड़ीसा इत्यादि क्षेत्रों से भी इस संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। यद्यपि मानव अब भी भोजन-संग्राहक ही था, तथापि अब वह गुफाओं और कंदराओं में वास करने लगा। अग्नि का व्यवहार बड़े पैमाने पर होने लगा एवं मृतक-संस्कार की परिपाटी भी प्रचलित हुई।

Scanned with CamScanner

(ग) उत्तर-पुरापाषाण-काल (The upper Paleolithic Age)—हिमयुग के अंतिम चरण के दौरान उत्तर-पुरापाषाणकालीन संस्कृति का उदय हुआ। इसी युग में होमोसेपियंस का उदय हुआ। इस काल में मानव-विकास की प्रक्रिया और भी अधिक तीव्र हुई। पाषाणोपकरण बनाने में ज्यादा दक्षता हासिल हुई। इस समय पत्थर के ब्लेडों से उपकरण बनाए जाने लगे। ब्लेडों (पत्थर के पतले फलकों) से हथियार बनाने की कला मध्य-पुरापाषाण-काल में भी प्रचलित थी, किन्तु इस समय इनका प्रयोग बढ़ गया। ब्लेडों से चाकू, ब्यूरिन (burin), छिद्रक (borer), स्क्रेपर (scrapper), शर (points) आदि बनने लगे। पत्थरों के अतिरिक्त, इस युग में हड्डी एवं हाथी-दाँत के उपकरण भी तैयार होने लगे। अस्थि के बने हुए अलंकृत छड़, भाले की नोंक, सूइयाँ इत्यादि अनेक प्राचीन स्थलों से मिले हैं। भारत में इस संस्कृति से संबद्ध अनेक स्थल प्रकाश में आए हैं। इनमें प्रमुख हैं—बेलन घाटी (उत्तरप्रदेश), रेनीगुटा, येर्रगोंडपलेम, मुच्छलता, चिंतामनुगावी, बेटमचेर्ला (आंध्र-प्रदेश), शोरापुर दोआब, बीजापुर (कर्नाटक), पटने, इनामगाँव (महाराष्ट्र), सोनघाटी (मध्यप्रदेश), विसादी (गुजरात), सिंहभूमि (बिहार) इत्यादि।

दृष्टिगोचर होते हैं। यद्यपि अब भी मनुष्य

Scanned with CamScanner

इस युग में मानव-जीवन में कुछ विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। यद्यपि अब भी मनुष्य की जीविका का मुख्य साधन शिकार ही था, तथापि सामुदायिक जीवन का विकास इस समय ज्यादा सुदृढ़ हुआ। अनेक व्यक्ति झुण्डों या कुलों में रहते थे, जिन्होंने आगे चलकर परिवार को जन्म दिया। यद्यपि सामाजिक असमानताओं एवं व्यक्तिगत संपत्ति की भावना का उदय अभी नहीं हुआ था तथापि मोटे तौर पर पुरुषों एवं महिलाओं में श्रम-विभाजन प्रारंभ हो चुका था। पुरुष भोजन-संग्राहक का कार्य करता था और महिलाएँ घर की देखभाल करती थीं। निवास के लिए गुफाओं के अतिरिक्त संभवतः झोपड़ियाँ भी बनाई जाती थीं। हड्डी से बनी हुई सूइयों की सहायता से जानवरों के चमड़े को वस्त्र के रूप में सिलकर पहना जाता था। कला एवं धर्म के प्रति भी लोगों की अभिरुचि बढ़ी। नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला व्यापकरूप से देखने को मिलती है। भीमबेटका की गुफाओं से उत्तर-पाषाणकालीन गुफा-चित्र मिले हैं। ये चित्र ऐसी अँधेरी गुफाओं में पाए गए हैं, जहाँ प्रकाश पहुँचना कठिन है। कुछ चित्रों को बनाते समय तो कलाकार को बैठने में भी कष्ट उठाना पड़ा होगा। इसलिए अनेक विद्वानों की धारणा है कि चित्रित गुफाएँ मंदिरों के सदृश थीं एवं इन्हें बनानेवाले एक विशेष वर्ग के व्यक्ति—जादूगर पुरोहित (magic priest) थे, जो पशुओं को वश में करने का उपाय करते थे। अगर ऐसी बात रही होगी, तो इसी समय से सामाजिक विभेद का भी आरंभ मानना चाहिए; क्योंकि एक वर्गविशेष का प्रभाव इससे परिलक्षित होता है। यह वर्ग बिना परिश्रम के ही (भोजन एकत्र करने) जादू के बल पर भोजन प्राप्त करता था। बाद में इसी कारण समाज में पुरोहितों का प्रभाव बढ़ गया। चित्रकला के अतिरिक्त नक्काशी करने एवं मूर्ति बनाने की कला भी विकसित हुई। हड्डी से बने उपकरणों पर सुंदर नक्काशी की जाने लगी। अस्थियों एवं हाथी-दाँत से सुंदर मूर्तियाँ भी बनने लगीं, जिनका कुछ धार्मिक महत्त्व भी था। उत्तरप्रदेश की बेलन घाटी से हड्डी की बनी मातृदेवी (Mother Goddess) की एक सुंदर मूर्ति मिली है। भारत में ऐसी मूर्ति अन्य किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं हुई है। इस समय आभूषण भी बनाए गए (अस्थियों एवं जानवरों के दाँतों से)। इतनी प्रगति के बावजूद मानव अभी सभ्य नहीं बना था। उसे "**असभ्य, बर्बर और जंगली** (Paleolithic savagery)" कहा गया है; परंतु सभ्यता की सीढ़ी पर 'ज्ञानी मानव' आगे बढ़ चुका था।

पुरापाषाणकालीन संस्कृति बहुत लंबी अवधि के दौरान विकसित हुई। इसकी अवधि सामान्यतः (समूचे विश्व में) 4 लाख वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष पूर्व तक मानी जाती है। भारत में यह संस्कृति पश्चिम में सौराष्ट्र और राजस्थान तथा पूर्व में विंध्याचल एवं छोटानागपुर तक विस्तृत थी। यह संपूर्ण क्षेत्र पुरापाषाणकालीन सांस्कृतिक क्षेत्र के नाम से जाना जा सकता है। आंध्र, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक और इस सांस्कृतिक क्षेत्र में कुछ विभेद हैं। इस समग्र संस्कृति के दौरान मनुष्य मुख्यतः घाटियों तथा पहाड़ी ढलानों पर नदी के किनारे एवं गुफाओं में रहता था।

Scanned with CamScanner